चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	23-7-23	9	1-7

ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ : कुलपति

हकृवि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवार्ड

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ठ अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अुनसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। भारतीय कृषि अनुंसधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एसके प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी।

हिसार। हकृवि के चारा अनुभाग की टीम को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

ज्वार की नई किस्मों की यह हैं विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी 53 एफ एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के ज्वार उगाने वाले सभी राज्यों के लिए अनुमोदित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह शूट फ्लाई, स्टेम बोरर जैसे कीड़ों के प्रति प्रतिरोधी है व ग्रे-लीफ स्पॉट व शूटी स्ट्रिप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। इस किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, एसके पाहुजा, डीएस फोगाट, सतपाल, एनखरोड़, बीएल शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है।

एचजेएच 1513 व एचजे 1514 हरियाणा में बिजाई के लिए चिन्हित

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिन्हित की गई हैं। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह मीठी व जूसी किस्म है जिसमे 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व स्टेम बोरर कीड़ो के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, सत्यवान आर्य, एसके पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है। इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह पत्ती रोगो के प्रति प्रतिरोधी व शूट फलाई व स्टेम बोरर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डीएस फोगाट, एसआर्य, एसके पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	23-7-23	2	3-7

हकृवि के चारा अनुभाग को सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवार्ड

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्व श्रेष्ठ अुनसंधान केंद्र अवार्ड प्रदान किया है। भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक डा. एसके प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

हकृवि के चारा अनुभाग की टीम को अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज। • विज्ञप्ति

ज्वार की नई किस्मों की ये हैं विशेषताएं, यह पशुओं के लिए बहुत उत्तम

अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने जवार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। ज्वार की सीएसवी 53 एफ एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के ज्वार उगाने वाले सभी राज्यों के लिए अनुमोदित किया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह शूट फ्लाई, स्टेम बोरर जैसे कीड़ों के प्रति प्रतिरोधी है व ग्रे-लीफ स्पाट व शूटी स्ट्रिप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। इसे डा. पम्मी, एसके पाहुजा, डीएस फोगाट, सतपाल, एन खरोड़, बीएल शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है।

विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में सराहनीय कार्य किए हैं, जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड मिला है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की किस्में हैं। इस उपलब्धि के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने वैज्ञानिकों को बधाई दी है।

8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिह्नित की गई है। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह मीठी व जूसी किस्म है जिसमे 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व स्टेम बोरर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फलाई व स्टेम बोरर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डा. पी कुमारी, डीएस फोगाट, सत्यवान आर्य, एसके पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	23-7-23	4	1-2

हकृवि के चारा अनुभाग की टीम को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

हकृवि के चारा अनुभाग को दूसरी बार मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

हिसार, 22 जुलाई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53 वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

» ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ : कुलपति

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सी.एस.वी.-53 एफ किस्म, एच.जे.एच.-1513 व एच.जे.-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	23-7-23	3	1-4

बैठक

इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में की हैं विकसित, राष्ट्रीय स्तर पर मिला है सम्मान

चारा अनुभाग को मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवॉर्ड

हकृवि के चारा अनुभाग की टीम को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज। संवाद

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र अवॉर्ड प्रदान किया गया है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान हैदराबाद की ओर से आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में यह अवॉर्ड प्रदान किया गया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन में बेहतरीन कार्य किया है। इसके साथ ही ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं, जिनके दृष्टिगत ये अवॉर्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं।

ये किस्में की तैयार

ज्वार की किस्म : सीएसवी 53 एफ

औसत पैदावार : 483 क्विंटल प्रति हेक्टेयर

विशेषता : शूट फ्लाई, स्टेम बोरर, ग्रे-लीफ स्पॉट व शूटी स्ट्रिप प्रतिरोधी

विकसित करने वाली टीम : डॉ. पम्मी कुमारी, एसके पाहुजा, डीएस फोगाट, सतपाल, एन खरोड़, बीएल शर्मा एवं मनजीत सिंह।

किस्म : एचजेएच 1513 , एचजे 1514

पैदावार : 717 क्विंटल प्रति हेक्टेयर

विशेषता : मीठी व जूसी किस्म, 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता, पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व स्टेम बोरर कीड़ों के प्रति सहनशील

टीम : डॉ. पी. कुमारी, डीएस फोगाट, सत्यवान आर्य, एसके पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी।

किस्म : एचजे 1514- 664

पैदावार : क्विंटल प्रति हेक्टेयर

विशेषता : अधिक प्रोटीन ,पत्ती रोग प्रतिरोधी व शूट फलाई - स्टेम बोरर के प्रति सहनशील

टीम : डॉ. पी. कुमारी, डीएस फोगाट, एस. आर्य, एसके पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	23-7-23	3	3-6

अचीवमेंट • ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में प्रदेश में बिजाई के लिए चिह्नित की

हकृवि के चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर फिर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवॉर्ड

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवॉर्ड मिला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना ज्वार की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक खाद्य एवं चारा फसल डॉ. एसके प्रधान ने यह अवॉर्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया विवि के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवॉर्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं।

दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

हाईब्रिड हरे चारे की औसत पैदावार 717 क्विंटल प्रति हेक्टेयर

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिह्नित की गई हैं। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह मीठी व जूसी किस्म है जिसमे 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व स्टेम बोरर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डा. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, सत्यवान आर्य, एसके पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है। इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व स्टेम बोरर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।

ज्वार की नई किस्मों की यह हैं विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने जवार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी 53 एफ एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के ज्वार उगाने वाले सभी राज्यों के लिए अनुमोदित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह शूट फ्लाई, स्टेम बोरर जैसे कीड़ों के प्रति प्रतिरोधी है व ग्रे-लीफ स्पॉट व शूटी स्ट्रिप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। इस किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डा. पम्मी कुमारी, एके पाहुजा, डीएस फोगाट, सतपाल, एन. खरोड़, बीएल शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय .

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	23-7-23	5	3-6

हकृवि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ : कुलपति प्रो. काम्बोज

हिसार, 22 जुलाई (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी 53 एफ एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के ज्वार उगाने वाले सभी राज्यों के लिए अनुमोदित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह शूट फ्लाई, स्टेम बोरर जैसे कीड़ों के प्रति प्रतिरोधी है व ग्रे-लीफ स्पॉट व शूटी स्ट्रिप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। इस किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, एस.के. पाहुजा, डी.एस. फोगाट, सतपाल, एन. खरोड़, बी.एल. शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिन्हित की गई हैं। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह मीठी व जूसी किस्म है जिसमे 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व स्टेम बोरर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, सत्यवान आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है। इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फलाई व स्टेम बोरर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।

हकृवि के चारा अनुभाग की टीम को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	23-7-23	10	3-5

हकृवि को दूसरी बार मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र अवॉर्ड

हिसार, 22 जुलाई (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवॉर्ड प्रदान किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुंसधान परिषद, नयी दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	21.07.2023	--	--

हकृवि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवॉर्ड

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. काम्बोज।

विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी 53 एफ एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के ज्वार उगाने वाले सभी राज्यों के लिए अनुमोदित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, एस.के. पाहुजा, डी.एस. फोगाट, सतपाल, एन. खरोड़, बी.एल. शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिन्हित की गई हैं। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, सत्यवान आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है।

इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	22.07.2023	--	--

हकृवि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ: कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी।

ज्वार की नई किस्मों की यह हैं विशेषताएं: विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिन्दुस्थान समाचार	22.07.2023	--	--

हिन्दुस्थान समाचार

हिसार: एचएयू के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

17hr · 1 shares

हिसार, 22 जुलाई (हि.स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एसके प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

कुलपति ने शनिवार को बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं, जिनके दृष्टिगत यह अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि यह किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी।

हिन्दुस्थान समाचार/राजेश्वर/सुमन/संजीव

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	22.07.2023	--	--

चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

नभ-छोर न्यूज ›› 22 जुलाई

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एसके प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-आधारित फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके फलस्वरूप ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी 53 एफ एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के ज्वार उगाने वाले सभी राज्यों के लिए अनुमोदित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, एसके पाहुजा, डीएस फोगाट, सतपाल, एन खरोड़, बीएल शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिन्हित की गई हैं। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाईब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह मीठी व जूसी किस्म है जिसमें 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे	22.07.2023	--	--

हकृवि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

[illegible]

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	21.07.2023	--	--

हकृवि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ: कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 22 जुलाई : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुकर्तीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिन्हित की गई हैं। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	22.07.2023	--	--

ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ

हकृवि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड : कुलपति प्रो. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज़

हिसार, 22 जुलाई। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में पशुधन व पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-आधारित फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुकटाई ज्वार की उन्नत सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिसके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी।

ज्वार की नई किस्मों की यह है विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी 53 एफ एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के ज्वार उगाने वाले सभी राज्यों के लिए अनुमोदित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह शूट फ्लाई, तना छेदक जैसे कीड़ों के प्रति प्रतिरोधी है व ग्रे-लीफ स्पॉट व सूटी स्ट्रिप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। इस किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, एस.के. पाहुजा, डी.एस. फोगाट, सत्यवान, एन. खरोड़, बी.एल. शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिन्हित की गई हैं। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह मीठी व रसीली किस्म है जिसमें 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व तना छेदक कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, सत्यवान आर्य, एस.के. पाहुजा, सत्यवान, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है। इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व तना छेदक कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सत्यवान, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।